मासिक—

मानव मन्दिर

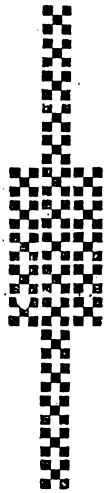

संरक्षक :

परम दयाल पं० फ़क़ीरचन्द जी महाराज

सम्पादक :

सेठ दुर्गादास जी

वर्ष ३	दिसम्बर १९७६	संख्या ८

झूठे सम्बन्ध संसार के

लेखक :—सेठ दुर्गादास साहिब (चण्डीगढ़)

एक नौजवान की मौत हो गई। घर वाले शोक मना रहे थे, रो रहे थे तथा छाती पीट रहे थे हाहाकार मचा हुआ था। उसकी पत्नी बेचारी बेहोश हो रही थी जिसके मुंह में पानी डाला जा रहा था। मां छाती पीट रही थी। बाप का हाल कुछ न पूछिये। भाई बहन सम्बन्धी सब रो रहे थे। पुकार २ कर माता कह रही थी कि हाय! तुम क्यों मर गये तुम तो अभी जवान थे। संसार देखना था। मैं बूढ़ी थी मैं मर जाती इसी प्रकार प्रत्येक सम्बन्धी की जवान से इसी प्रकार के शब्द निकल रहे थे। मुहल्ला के सब लोग इक्ट्ठे हो गये थे। एक हजूम बन गया था।

इधर से एक ब्राह्मण हकीम आ निकला उसने रोने धोने की आवाज़ सुनी। ठहर गया, दिल में दया आई क्या देखता है कि एक नौजवान लड़का मरा हुआ है और सब लोग इसके चारों और इकट्ठे हैं

और रो पीट रहे हैं। मातम कर रहे हैं। ब्राह्मण ने सबको तसल्ली दी तथा खामोश किया। वह कहने लगा कि चिन्ता मत करो और नौजवान को देखने लगा। नाड़ी देखी, कुछ देर बाद कहने लगा कि मेरे पास एक दवाई है जिससे मैं इसको जीवित कर सकता हूं। फिर क्या था? सब शान्त हो गये। समझने लगे कि ईश्वर स्वयं इनके घर आन पधारें हैं। सब लोग इस ब्राह्मण की बन्दगी करने लगे।

ब्राह्मण ने कहा दवाई मेरे पास है। एक गोली जेब की शीशी से निकाल कर दिखाई। जीवित भी अवश्य हो जायेगा। इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं है। लेकिन एक शर्त यह है कि पहले इस गोली को एक आदमी अपने मुंह में चबाकर फिर इस नौजवान के मुंह में चवाई हुई गोली डाल दे, नौजवान तो जीवित हो जायेगा लेकिन गोली चबाने वाले की मौत हो जायेगी। क्या कोई आप में से यह गोली चबाने को तैयार है? यह सुनकर सन्नाटा छा गया।

सब एक दूसरे का मुंह ताकने लगे पत्नी कहने लगी मेरे छोटे २ बच्चे हैं इनका पालन-पोषण कौन

करेगा ? मेरे ऊपर तो ग़म का पहाड़ टूट गया। आप चला गया मुझे मुसीबत में डाल गया। माता कहने लगी कि मैंने तो अभी तीर्थ यात्रा पर जाना है। अपना जन्म बनाऊंगी। मरने वाला तो मर गया। इसका समय आ गया था। हाय ! हाय ! कोई बहन कोई भाई तथा कोई सम्बन्धी गोली चबाने को तैयार नहीं हुआ। आखिर मुर्दा को शमशान ले जाने लगे। मौत रात को हुई थी अतः मुर्दा का शरीर फूल गया था। दरवाजा तंग था इस दरवाजा से मुर्दा को निकलना कठिन हो गया। पड़ोसी कुल्हाड़ी लेकर आया, लगा चौखट को काटने। इतने में पत्नी ने देखा यह क्या हो रहा है ? उसने कहा चौखट मत काटो मैं विधवा औरत हूं। अब चौखट कौन बनायेगा। मुर्दे के बाजू काट दो फिर लाश निकल जायेगी।

नौजवान को गुरु शिक्षा दिया करता था कि इस संसार में अपना कोई नहीं है। सब लेन देन के सम्बन्ध हैं। कुछ पिछले जन्मों के कर्मों के कारण बंधे हुये हैं। संसार अपने सुख के लिये साथ देता है। मौत पर अपने सुख के लिये मातम करते हैं लेकिन नौजवान का प्रेम अपनी पत्नी के प्रति बहुत था।

गुरु को कहा करता था मैं इसके बिना और वह मेरे बिना जीवित नहीं रह सकती है। गुरु ने नौजवान को सबक देने के लिए यह युक्ति सिखाई थी। इसको ऐसी दवाई खिलाई थी कि वह मरा हुआ मालूम हो। लेकिन वह हरेक बात सुन सके।

जब उसके बाजू काटने लगे तव वह होश में आ गया उठ खड़ा हुआ, चलकर कहने लगा कि यह क्या कर रहे हो और दौड़ कर गुरु के चरणों में जा पड़ा तथाकहने लगा कि आपकी शिक्षा बिल्कुल ठीक है इस संसार में कौन है किसी का ? ये सब रिश्ते झूठे हैं। जो मौत के साथ समाप्त हो जाते हैं। मकान, कोठियां, रिश्तेदार तथा ज़मीन भी यहां छूट जाते है। रिश्ते टूट जाते हैं।

ऐ ! वन्दे तेरा इस संसार में कुछ नहीं है। इस संसार की कोई वस्तु तुम अपने साथ नहीं ले जा सकते हो।

कमाये, खाये, खिलाये कर. कर ले काम अपना।
चलनी बिरयां हे नरा. तेरे संग न चले छिदाम।

कमाओ खाओ और खिलओ अर्थात दान देकर अपना काम कर चलो। सिर्फ कमाओ और खाओ नहीं बल्कि खिलाओ भी।

तरुबर पाती से यों कहे, सुनो पात इक बात।
यह संसार एसी रीति है, इक आवत इक जात।

वृक्ष अपने पतों से कहता है कि जगत की यह रीति है कि एक आता है और एक जाता है। यहां ठहरना किसी का काम नहीं है। अतः करनी ऐसी कर चलो, तुम हंसो जग रोये।

(नोट) यह शिक्षा वच्चों के लिये नहीं है और नौजवानों को यह मजबून पढ़ना नहीं चाहिये। अभी इन्होंने खेल खेलना है। अंगड़ाई ली है, संसार देखना है, उन्नति के शिखर पर चढ़ना है, दुनियां के भोग भोगने हैं, जीवन का आनन्द लेना है। यह विषय तो वूढ़ों के लिए है जिनका दिल दुनियां से उचाट हो गया है सब भोग भोग लिये गये हैं। दिल बेचैन है और शान्ति की इच्छा है।

संत सत्गुरु वक्त का बन्धन

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होश्यारपुर।

बंधे तुम गाढ़े बंधन आन।
पहिले बंधन पड़ा देह का, दूसर तिरिया जान।
तीसर बंधन पुत्र विचारो, चौथा नाती मान।
नाती के कहिं नाती होवे, फिर कहो कौन ठिकान।
धन संपति और हाट हवेली, यह बन्धन क्या करूं बखान।
चौलड़ पचलड़ सतलड़ रसरी, बांध लिया अब बहु विधि तान।
कैसे छूटन होय तुम्हारा, गहरे खूंटे गड़े निदान।
मरे बिना तुम छूटो नाहीं, जीते जी तुम सुनो न कान।
जगत लाज और कुल मरजादा, यह बंधन सब ऊपर ठान।
लीक पुरानी कभी न छोड़ो, जो छोड़ो तो जग का हान!

क्या क्या कहूं विपत मैं तुम्हरी, भटको जोनि भूत समान।
तुम तो जगत सत्य कर पकड़ा, क्यों कर पाओ नाम निशान।
बेड़ी तौक हथकड़ी बांधे, काल कोठरी कष्ट समान।
काल दुष्ट तुम बहु विधि बांधा, तुम खुश होके रहो गलतान।
ऐसे मूरख दुख सुख जाना. क्या कहुं अजब सुजान।
शरम करो कुछ लजा ठानो, नहिं जमपुर का भोगो डान।
राधास्वामी सरन गहो अब. तो कुछ पाओ उनसे दान।

राधास्वामी। रात को बहुत से सत्संगी जो बाहर से आये हुये हैं, वे मेरे मकान पर गये। उनके हालात सुने और फिर अपने आपसे पूछा कि फकीर तुमने यह मकड़ी का जाला क्यों तना, क्या तू किसी की सहायता कर सकता है? अपना जीवन याद आता है। मैं क्यों यह काम करता हूं? हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे कहा था कि तू फकीर बन। फकीर तो मैं बन गया उनकी दया से और आप सत्संगियों की दया से। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे नाम लिखा है।

देह के बन्ध फक्कीर जो आवे, बन्ध निर्बन्ध न सोई।
बन्ध कर बन्धुए जीव छुड़ावे, समझे यह भति कोई।

मैं हूं समय का सत्गुरु। सत्संग कराता हूं और किताबें लिखता हूं। क्यों? मैं स्वयं बन्धन में रहा

हूं। मेरा बन्धन क्या है ? इस संसार में आया। होश आई। पिता जी का स्वभाव बहुत सख्त था, ज़रा सी बात पर पीटना शुरू कर देते थे। घर में गरीबी थी। कुछ बड़ा हुआ तो शादी हो गई। स्त्री $7\frac{1}{2}$ साल हस्पताल में बीमार रही और मर गई। इसलिए मैं दुखी रहता था और मालिक की तलाश करता था। इस बन्धन को तोड़ने के लिए राम को मिलने का बन्धन लिया कि यदि राम मिल जायेगा तो ये सारे दुख दूर हो जायेंगे और बन्धन कट जायेंगे। यह विचार मुझे रामायण और भागवत से मिला था। एक बन्धन टूटा तो रामायण और भागवत का बन्धन आ गया। फिर सुमिरन ध्यान प्रकाश और शब्द के चक्कर में आ गया। कुबेरनाथ ! आंखें खोल। अब मुझे पता लग गया कि बन्धन क्या थे। अपने आपको अर्थात अपनी सुरत को किसी वस्तु के साथ जोड़ने की इच्छा का नाम बन्धन है। हम जानते हैं कि हमने मर जाना है लेकिन फिर भी हमको शरीर के साथ मोह है और हम चाहते हैं कि हम न मरें। पहले शरीर का बन्धन फिर सगे सम्बन्धियों का बन्धन। यह यदि छूट भी जाये तो फिर धर्म कर्म

और पंथ का बन्धन। अब आप लोगों से पता लगा कि मैं तो कुछ और ही चीज़ हूं और मुफ्त में ही यहां फंसा हुआ हूं।

जब सत्संगियों ने मुझे बताया कि मेरा रूप उनके अन्तर प्रकट होता है और उनकी सहायता करता है लेकिन मैं तो होता नहीं तो मुझे विश्वास हो गया कि मेरे अन्तर भी जो कुछ प्रकट होता है ये भी सब संस्कार है और माया है। मुझे समझ आ गई कि मैं भी हज़ूर दाता दयाल जी महाराज के साथ अपने ही एक विचार से बन्धा हुआ था। जब यह बन्धन कट गया कि कौन किसी का बाप, कौन किसी की मां, कौन किसी की स्त्री और कौन किसी का बेटा तो फिर इस ममता में आ गया कि मेरा धन, मेरी दौलत, मेरा गुरु और मेरा चेला। अब इस बन्धन से भी निकल गया और अब मैं ऊंचा जाता हूं। प्रकाश को देखता हूं और शब्द को सुनता हूं फिर मैं उस चीज़ की तलाश करता हूं जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। वह वस्तु बन्धन में आई हुई है। वह चीज़ क्या है? सुनो! प्रकाश और है, शब्द और है और वह चीज़ और है। प्रकाश और

शब्द से भिन्न है। जब मुझे यह विश्वास हो गया कि मेरे या तुम लोगों के अन्तर में जो रंग रूप प्रकट होते हैं, यह सब माया है, संस्कार हैं और केवल कल्पना है तो मैंने एक फरज़ी बन्धन लगाया कि मैं समय का सन्त सत्गुरु हूं। मैं सत्संग कराता हूं और किताबें लिखता हूं। क्यों ? जब फकीर देह में आता है तो वह आप तो निर्बन्ध होता है मगर वह अपने आपको बन्धवा बनाकर दूसरे जीव जो बन्धन में होते हैं उनको छुड़ाता है। फकीर वह वस्तु है जो मेरे अन्तर में प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है। जो मैं हूं वही तुम हो। लेकिन पहले मैं बन्धन में था और अब बन्धन से निकल गया। अब मैं यह यत्न करता रहता हूं कि अपने आपको निर्बन्ध अवस्था में रखूं। संसार के बन्धन तो मेरे टूट गये और मन के बन्धन भी टूट गये मगर प्रकाश और शब्द का बन्धन अभी तक नहीं टूटा, लेकिन कुछ ढीला अवश्य पड़ गया है। यह कब टूटेगा, इसका मुझे पता नहीं। जब यह भी टूट जायेगा तो फिर क्या होगा ?

माला फेरूं न हरि भजूं, मुख से कहूं न राम।
मेरा राम मुझको भजे, तब पाऊं विसराम।

या वह अवस्था आ जयेगी जिसके बारे स्वामी महाराज ने सार बचन नज़म में लिखा है।

नह ख़ालिक़ मख़लूक़ न ख़िल्क़त, कुर्ता कारन काज न दिक्कत।
द्रष्ट दृष्ट नहीं कुछ दरसत, बाच लक्ष नहीं पद न पदारथ।
ज़ात सिफ़ात न अव्वल आखिर, गुप्त न परघट बातिन ज़ाहिर।
राम रहीम करीम न केशो, कुछ नहिं कुछ नहिं कुछ नहिं था सो।
सिम्रित शास्त्र न गीता भागवत, कथा पुराण न वक्ता कीरत।
सेवक सेव न दास न स्वामी, नहिं सतनाम न नाम अनामी।

लेकिन अभी तक मुझमें पूरी तरह से यह अवस्था आई नहीं है। मैंने यह खेल इसलिए रचाया है कि हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे ज़िम्मे यह कर्तव्य लगाया हुआ है। उन्होंने फरमाया था।

तू तो आया नर देही में धर फकीर का भेसा।
दुखी जीव को अंग लगाकर, लेजा गुरु के देसा।
तीन ताप से जीव दुखी हैं, निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी।

तुम लोग मेरे पास आते हो। मैं चाहता हूं कि तुम लोग अपने रूप को समझ कर निर्बन्ध बनने का यत्न करो। मगर तुम लोग छूटना नहीं चाहते और इस बन्धन को कायम रखना चाहते हो। लेकिन यह बन्धन तो ज़रूर कटेगा। आज नहीं तो कल और कल नहीं तो दो दिन बाद। अब बैसाखी आ रही है। मैं अपने आपसे पूछता हूं कि तुमने क्या लेना इस काम से ? लेना क्या है, गुरु की आज्ञा और मेरे कर्म। मैं आया ही फकीर बनने के लिए हूं। पहले मुझसे फकीर बना नहीं जाता था। तभी तो हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे यह काम दिया था और आप सत्संगियों ने मुझे निर्बन्ध कर दिया। इसलिये मैं आप लोगों को अपना सच्चा सत्गुरु मानता हूं। ने मानवता मंदिर बनाया। सत्संग कराता हूं और किताबें लिखता हूं। क्यों ? ताकि तुम लोग भी बन्धन से निकल जाओ।

नाती के कहिं नाती होवे, फिर कहो कौन ठिकान।
धन संपति और हाट हवेली, यह बन्धन क्या करूं बखान।

किसी का कोई झगड़ा है और किसी का कोई। किसी का बेटा नालायक है और किसी को स्त्री से

शकायत है। ये सब अपने माने हुये बन्धन हैं। इन बन्धनों से आज़ाद होने के लिए वेदान्त दृष्टि कोण से योग वासिष्ट है। संसार में ज्ञान का भंडार केवल दो किताबें हैं एक गीता और दूसरी योग वासिष्ट लेकिन हम लोग केवल पढ़ना ही जानते हैं गुनना नहीं जानते। गुरु भक्ति क्या है? गुरु के बचनों को सुनना, गुनना और उनपर अमल करना।

दर्शन करे बचन पुनि सुने, सुन सुन कर फिर मन में गुने।
गुन गुन काढ़ लेवे तिस सार, काढ़ सार तिस करे आहार।
कर अहार पुष्ट हुआ भाई, जग भव भय सब गई गंवाई।

यह है असली गुरु भक्ति। भोले भाले लोगो! यदि धन देने से, रोटी खिलाने से या कपड़े देने से पार उतारा हो जाता तो सभी पैसे वाले निर्बन्ध हो जाते। लेना देना तो संसार का व्यवहार है। धन दोगे धन मिलेगा, प्रेम दोगे प्रेम मिलेगा, घृणा दोगे घृणा मिलेगी और गाली दोगे तो गाली मिलेगी। जो दोगे वही मिलेगा। मगर जो कुछ मैं देना चाहता हूं वह तो कोई लेता नहीं है। मैं तो तुम लोगों को निर्बन्ध करना चाहता हूं। मगर जो कुछ मैं कहता हूं उसपर अमल तो कोई करता नहीं केवल मेरी ही प्रशंसा

करते रहते हैं। अमल करने से तुमको लाभ पहुंचेगा लेकिन यहां आकर मैं फेल हो गया कि अमल करने और गुनने की शक्ति व्यति में है भी या नहीं। फिर सोचता हूं कि।

जिस पर दया आद कर्ता की सो यह नेमत पावे।

जिसके भाग्य में होता है वही इस ओर आता है। अरे दिवाने पूर्णचन्द! जो कर्म तुमने किये हुये हैं वे अवश्य भोगने पड़ेगे।

चौलड़ पचलड़ सतलड़ रसरी, बांध लिया अब बहु बिधि तान।

यदि स्वामी जी महाराज आज होते तो उनसे प्रार्थना करता कि आपका इससे क्या भाव है। मैं यह समझता हूं कि शरीर मन प्रकाश और चौथा पद जिसमें रहकर हम प्रकाश को देखते है और शब्द को सुनते है यह चार लड़ हैं। ये चारों भी बन्धन का कारण हैं। हमारी सुरत इनमें फंसी रहती है यदि तुम शब्द में बन्दे हुये न होते तो जब तुम्हारा शब्द नहीं खुलता तो रोते क्यों हो? मैं यह समझता हूं कि पांच लड़ पांच ज्ञानइन्द्रयें हैं और सातलड़ अभ्यास के दर्जे सहस दल कंवल, त्रिकुटि सुन महासुन

भंवर गुफा और सतलोक हैं। हम इन सबसे न्यारे हैं मगर हम इनके बन्धन में हैं। हम न शरीर हैं, न मन हैं, न प्रकाश हैं और न शब्द हैं। हम क्या हैं ?

"अकह अपार अगाध अनामी।

वह हमारी ज़ात है हम उसमें आकर यहां चक्कर में आ गये। गुरु आता है और सत्संग कराकर जीव को समझाता है कि इस से निकलो। कैसे निकलोगे ? सुरत को इस ओर से हटाओ। मगर जबतक शरीर है यदि कोई यह चाहे कि वह इस बन्धन से निकल जाये तो यह असम्भव है चाहे वह सन्त हो परमसन्त हो। इस बन्धन के रूप को समझकर उसमें न फंसना ही बन्धन से आज़ाद होना है। यह मेरी समझ में आया है। कोई सन्त भी जगत से नहीं निकला और न ही जबतक शरीर है निकल सकता है। वे खेल खेलते थे मगर बन्धन में नहीं आते थे। मैं भी ऐसा ही करता हूं। तुम लोगों के साथ हंसता हूं और खेलता हूं मगर बन्धन में नहीं आता। मगर जिन बन्धनों में पहले आ चुका हूं वे बन्धन अब तक भी मुझे नहीं छोड़ते। मुझे अभी तक भी रेलगाड़ी, मां बाप और स्त्री स्वप्न में आ जाते हैं। कभी तो मुझे याद रहता है कि यह

स्वप्न है और कभी याद नहीं रहता। इसलिए क्या पता कि मेरा क्या परिणाम होगा।

यदि हमको घाटा पड़ गया, लड़का मर गया या कोई और हानिकारक बात हो गई तो हम दुखी होते हैं और यदि कोई अच्छी बात हो गयी तो हम सुखी होते हैं। हम सब इन्हीं वन्धनों में बन्धे हुये हैं। जिस को अपने रूप का ज्ञान हो जाता है वह निर्बंध हो जाता है। तुम सभी फकीर हो। तुम्हारे अन्तर वह वस्तु जो प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती है और शब्द में रहती हुई शब्द को सुनती है वह है फकीर और वही तुम हो। देह में आये और बन्ध गये और अब रोते हैं। इससे छूटने का क्या उपाय है ?

कैसे छूटन होय तुम्हारा, गहरे खूंटे गड़े निदान।
मरे बिना तुम छूटो नाहीं, जीते जी तुम सुनो न कान।

स्वामी जी कहते हैं कि लोग सुनते नहीं हैं। अब तुम सोचो कि कहां मेरा मार्ग और कहां तुम्हारी ये सांसारिक बातें। मगर मेरा यह कर्तव्य है। इसलिए मैं यह काम करता हूं और चाहता हूं कि जैसे मैं निर्बन्ध हुआ ऐसे ही तुम भी निर्बन्ध हो जाओ। मगर यहां आकर मैं फेल हो गया। स्वामी

जी के समय में कितने आदमी निर्बन्ध हुये यह मुझे पता नहीं। मगर यह मैंने पढ़ा है कि स्वामी जी ने ३५० आदमियों को नाम दिया और उनमें से भी वहुत से आदमी नाम लेकर उनको छोड़ गये। वह आदमी को पहले टैस्ट किया करते थे। कबीर साहिब ने धर्मदास को ३० साल के बाद नाम दिया था। धर्म दास हर दस साल के बाद कबीर साहिब के पास आते और वह कहते कि अभी तुम नाम के योग्य नहीं बने। धर्मदास ब्राह्मण था और लकडियों को पानी से धोकर जलाया करता था। जब धर्मदास को नाम दिया तो उसके बाद एक दिन जब वह लकड़ियें जला रहा था तो उनमें बहुत सी च्यूंटियां जल गई और धर्मदास दुखी हुआ। कबीर साहिब का रूप प्रकट हुआ और धर्मदास से कहा कि क्या तुम कृष्ण जी के उपासक हो? उसने कहा कि हां। कृष्ण जी ने तो महाभारत में अठारह क्षोणी लोग मरवा दिये और उसको कोई पाप नहीं तो तुम इन च्यूंटियों के जल जाने से क्यों रो रहे हो। जब कृष्ण जी को कोई पाप नहीं तो तुमकों क्या पाप है?

जगत लाज और कुल मरज़ादा, यह बन्धन सब ऊपर ठान ।
लोक पुरानी कभी न छोड़ो. जो छोड़ो तो जग की हान ।

हम लोग लोक लाज के मारे पुराने रीति रिवाज को नहीं छोड़ते । किसी धर्म में शामिल होने के बाद हम जानते भी हैं कि यहां कुछ नहीं है मगर हम बन्धन में आ जाते हैं । उदाहरण के रूप में मेरे पास दो आनन्द मार्गी आये । मैंने उनसे पूछा कि तुम्हारे गुरु महाराज के विरुद्ध क्या कुछ हुआ । वे कहने लगे कि नहीं महाराज ! उनके विरुद्ध तो कोई ऐसी बात नहीं है । वह तो बहुत पढ़े लिखे आदमी हैं मगर जेल जाने के डर से छुपे हुये हैं । मैंने बताया है कि सुमिरन ध्यान भी बन्धन है मगर एक बन्धन को तोड़ने के लिए दुसरा बन्धन लेना पड़ता है । सुमिरन ध्यान का बन्धन और दूसरे बन्धनों को तोड़ने के लिए गुरु का बन्धन है और फिर गुरु का बन्धन भी छोड़ना पड़ता है । सनातनधर्म कहता है कि पहले बुराई को छोड़ो और अच्छाई को पकड़ो । नेक बनो । जब नेक बन जाओ तो फिर नेकी को भी छोड़ दो । एक कांटे को निकालने के लिए दूसरा कांटा प्रयोग करो और जिस कांटे से दूसरे कांटे को निकाला है फिर उस कांटे को भी फेंक दो । क्योंकि यह सम्भव

है कि यह कांटा तुमको फिर किसी समय चुभ जाये। हम लोग धर्मों के टेकी हैं। यदि रामायण का एक पृष्ट किसीने फाड़ दिया तो सिर फट गये या किसी के गुरु को किसी ने बुरा भला कह दिया तो झगड़ा खड़ा हो गया इसलिए मैं कहा करता हूं कि यदि तुम्हारे सामने किसीने मेरे बारे बुरी बात कही या मुझे गाली दी और तुमको क्रोध न आये तब मैं समझूंगा कि तुमने मेरी शिक्षा को प्राप्त किया है और मेरे मरने पर यदि कोई रोयेगा तो समझो कि उसने मेरी शिक्षा को प्राप्त नहीं किया। हम एक बन्धन को छोड़कर दूसरा बन्धन ले लेते हैं और उसमें फंस जाते हैं। बन्धन के बिना तो निर्वाह नहीं मगर बन्धन के रूप को समझो।

पहले गुरु की भक्ति कर पीछे और उपाय।
बिन गुरु भक्ति मोह जाल कभी न काटा जाय।
मोटे बन्धन जगत के गुरु भक्ति से काट।
झोनें बन्धन मन के कटें नाम परताप।

कैसे ? तुम्हारे अन्तर रूप आता है या प्रेम आता है या तुम मानवता मंदिर के साथ बन्धे हुये हो तो इस बन्धन से निकलने के लिए नाम है।

नाम में बन्धन नहीं है। सुरत अपने आपमें ठहर कर नाम को सुनती है वहां कोई बन्धन नहीं है।

सहजे ही धुन होत है हरदम घट के माहीं।
सुरत शब्द मैला भया मुख को हाजत नाहीं।

जो कुछ मैंने कहा है उसका प्रमाण हजूर दाता दयाल जी महाराज के शब्द में है। मैं पथभ्रष्ट नहीं हूं मैं बिल्कुल सच्चाई वर्णन कर रहा हूं। पहले बुराइयों को छोड़ो फिर इस मार्ग में आओ और फिर यदि तुम्हारे भाग्य में होगा तब बन्धन को तोड़ोगे।

ममता जाती नहीं मेरे मन से।
मेरा कोई न मैं हूं किसीका, मुझमें कुछ नहीं मेरा।
समझ बूझ एसी काम न आई, करता हूं मेरा तेरा।
मिटे न यह लाख यत्न से।

ममता भी तो बन्धन है। ममता क्या है ? मेरा गुरु, मेरा धर्म, मेरा कर्म, मेरा इष्ट, मेरा पंथ, मेरा ईश्वर, मेरा प्रमात्मा यह सब मेर तेर है और बन्धन है। यद्यपि यह हमारी सम्पत्ति नहीं है।

साथ न लाया अपने कुछ भी, साथ नहीं कुछ जावे।
बीच की दशा में साथ हुआ है, समझ में बात यह आवे।
मनन श्रवण से कथन से।

मेरे तेरे पने का बन्धन, मिथ्या बन्ध बंधाया।
यह बन्धन नहिं काटे कटता, कितना उपाय कराया।
योग युक्ति साधन से।

क्यों ? क्योंकि योग युक्ति और साधन ये स्वयं बन्धन हैं।

क्या ले आया क्या ले जायेगा. यह जाने सब कोई।
जान जान अनजान बना है, अचरज अचरज होई।
छुटा नहीं कोई यह बन्धन से।
तन मन धन साधन में ममता, योग ज्ञान में ममता।
राधास्वामी अब तो दया करो तुम, चित में आवे समता।
जाये ममता जीवन से।

रात को मेरे मकान पर कुछ सत्संगी आये। मैं अपनी जिम्मेदारी को समझता हूं। मैंने पाखण्ड का जाल नहीं बनाया। मैंने अपने नाम, अपने मान और अपने धन के लिए कुछ नहीं किया। मैंने जो कुछ किया है यह मेरा कर्तव्य है। हमारे साथ जो कुछ होता है। यह हमारे कर्म का फल है और कर्म हमारी बासना है। इसलिए अपनी बासना को ठीक रखो और अपने विचार को ठीक रखो। जब तक शरीर है बन्धन तो रहेगा मगर अच्छे विचार को रखकर अपने कर्म को बदलो। मैं क्या करता हूं ?

लोगों को अच्छा विचार ही तो देता हूं। जिनका विश्वास होता है उनके काम हो जाते हैं। सदा यह विश्वास रखो कि प्रकृति के हर एक काम में अच्छाई है। यदि दुख आता है तो उसको भी अच्छा ही समझो इससे दुख कम हो जायेगा। सब तुम्हारे ही विचार का नक्शा है। जगवन्ती! मालिक ने जो कुछ किया है यह तेरी अच्छाई के लिए होगा। मगर तुम्हारा संकल्प शेख चिल्ली वाला हिसाब है। सब कुछ हमारी अच्छाई के लिए होता है। जब हमारे बच्चे हमारा कहना नहीं मानते तो हम उनको मारते हैं या दण्ड देते हैं। ऐसे ही जब हम ग़लत रास्ता अपनाते हैं तो हमारा मालिक भी हमको दण्ड देता है। यदि तुमको अपने बच्चों को दण्ड देने का अधिकार है तो तुम्हारे मालिक को भी तुमको दण्ड देने का अधिकार है। लेकिन तुम अपने बच्चों को दण्ड क्यों देते हो? उनकी अच्छाई के लिए। ऐसे ही तुम्हारा मालिक भी तुम्हारी अच्छाई के लिए सब कुछ करता है। जो आदमी संसार में ज्यादा फंसा हुआ होता है तो वह मालिक उसके

साथ ऐसी घटना करता है कि उसका मोह टूट जाये। इसके बारे में एक उदाहरण सुनो।

नारद मुनि कहीं जा रहा था तो रास्ते में उसको एक और साथी मिल गया। एक सेठ के पास रात रहे। सेठ ने उनको सोने के बर्तनों में खाना खिलाया। प्रातः को जब चलने लगे तो नारद के साथी ने ये बर्तन चुरा लिए। नारद को क्रोध आया मगर उसने साथी से कुछ कहा नहीं! आगे चल दिये। सायं हो गई और आन्धी और वर्षा आ गई। रात व्यतीत करने के लिए कोई स्थान चाहिए था एक झोंपड़ी दिखाई दी। वहां गये तो उत्तर मिला कि यहां कोई स्थान नहीं है। उन्होंने बहुत प्रार्थना की तो उनको रात व्यतीत करने की आज्ञा मिल गई और रात को खाने के लिए उनको चने दिये। प्रातः जब चलने लगे तो सोने चान्दी के बर्तन उनको दे दिये। नारद बहुत चकित हुआ। आगे गये तो एक सेठ के पास चहुंचे। उस सेठ के कोई लड़का नहीं था और वह सन्तों की सेवा किया करता था। फिर लड़का हो गया तो वह लड़के के मोह में फंस गया। जब वह नारद और उसके साथी के साथ या और सन्तों के

साथ बात करता था तो उसका ध्यान अपने लड़के में होता था। प्रातः को जब सेठ के पास से चले तो नारद के साथी ने सेठ के लड़के को मार दिया। आगे चल कर नारद ने पूछा कि तुमने ऐसा क्यों किया। विष्णु जी महाराज प्रकट हो गये और कहने लगे कि जिसके सोने के बर्तन चुराये थे वे इसलिए चुराये थे ताकि इस घटना से उसको ज्ञान हो जाये और वह भक्ति की ओर आ जाये। उस झौंपड़ी वाले को सोने के बर्तन इसलिए दिये ताकि उसको यह समझ आ जाये कि सन्तों की सेवा करने से यह फल मिला है और वह सेवा में लग जाये। सेठ के बच्चे को इसलिए मारा था कि वह मोह से निकल जाये और अपने जीवन को अच्छा बनाये। इसलिए मालिक जो करता है वह अच्छा करता है। यदि दुख आता है तो भी अच्छाई के लिए आता है। मैं अपने बारे बताता हूं कि मेरा एक लड़का मर गया और मैं खुश हुआ। मेरी स्त्री सत्संगियों से कहती थी कि मेरा तो लड़का मर गया और तुम्हारे गुरु को जोबन चढ़ गया। मैं क्योंकि गरीब था और सोचता था कि इसको कैसे पढ़ाऊंगा। इसलिए मैं खुश हुआ। मेरी एक बिवाहित लड़की मर गई। मैंने शुकर किया। क्यों ? दामाद सदा तंग

करता था कि यह नहीं दिया और वह नहीं दिया। एक कंवारी लड़की मर गई। मैंने दाता का धन्यवाद किया। उसकी शिक्षा और विवाह के लिए कहां से धन लाता? इसलिए मालिक जो करता है अच्छा करता है। तुम्हारा ही विश्वास काम करता है। मीरां बाई को विश्वास था कि ठाकरों का प्रसाद अमृत होता है उसको विष दिया गया। उसके विश्वास के कारण विष भी उसपर कोई बुरा प्रभाव न कर सका। यदि हम यह सोचेंगे कि मालिक जो करता है अच्छा करता है तो उसका परिणाम हमारे लिए अच्छा ही होगा। *As you sow, so shall you reap* जैसी करनी वैसी भरनी, जैसा ख्याल फैसा हाल।

मैंने यह सत्संग आपको नहीं कराया, मैंने अपना कर्तव्य पूरा किया है। मैंने फरज़ी तौर पर अपने आपको बान्धा कि मैं समय का सन्त सतगुरु हूं। अब मैं न गुरु हूं, न चेला हूं, न सेवक हूं और न स्वामी हूं। तो अब मैं क्या हूं? मेरा एक मालिक है और मैंने उसको हज़ूर दाता दयाल जी महाराज के रूप में माना। यह मेरी अवस्था है :-

भरोसा तेरा है तेरी आस मन में, लगा रहता हूं तेरे सुमिरन भजन में।
यही है जतन और यही काम मेरा, जपा करता हूं रात दिन नाम तेरा।
तेरी मौज में रहके निसदिन सुखी हूं, नहीं भय न चिन्ता न जग से दुखी हूं।
खुली आंख से तेरा दर्शन जो पाया, मिटे सहज में मान मद मोह माया।
न जोगी न साधू न ज्ञानी बना मैं, न भोगी असाधू न मानी बना मैं।
जो था पहले अब भी वही रूप मेरा, न व्यापा मुझे काल का हेरा फेरा।

तो फिर मेरा रूप क्या है ? मैं वह हूं जो प्रकाश को देखता है और शब्द को सुनता है। तो फिर मैं कौन हूं ?

"अकह अपार अगाध अनामी"

हम सब का वही रूप है। हम बन्धन में आ गये। गुरु आता है, चेतावनी देता है, ज्ञान देता है और भेद बता देता है।

न जागा न सोया न सुषुप्ति में आया, न आसा निरासा के भय ने सताया।
न दौड़ा न बैठा न लेटा कभी मैं, न माता पिता और न बेटा कभी मैं।

नहीं ब्रह्म माया का है द्वन्द मुझको न उलझा सका कर्म का फन्द मुझको।
सहज रूप है और सहज कर्म बानी, सहज में सहज की सहज हूं निशानी।
सहसदल अनेक और त्रिकुटी को त्रिपुटि, दशा द्वैत की सुन्न में भी न प्रगटी।

वह वस्तु न मां है और न बाप है। वह अपना ही रूप है। मुझे अपने रूप का तुम लोगों से पता लगा। इस लिए में आप लोगों का मान करता हूं।

महासुन्न अद्वैत का भाव छूटा, भंवर में नहीं काल माया ने लूटा।
अलख हूं अगम हूं अनामी बना हूं, कहूं कैसे कैसा कहां और क्या हूं।
गुरु राधास्वामी ने आकर चिताया, मेरा रूप मुझको सहज में लखाया।

मुझे जब अपने रूप का ज्ञान नहीं रहता तो मैं इस अवस्था से गिर जाता हूं और फंस जाता हूं लेकिन जल्दी सम्भल जाता हूं। तो गुरु कौन है? गुरु ज्ञान स्वरुप है और अनुभव स्वरुप है। लोगों को पता नहीं इसलिए सारा जीवन राम का, कृष्ण का, बाबे फकीर का या किसी और गुरु का ध्यान

करते करते मर गये और मंज़िल तक न पहुंच पाये। मेरा सत्संग बहुत ऊंचा है मगर यह मेरे वश की बात नहीं है। मेरा पहला समय समाप्त हो गया। जो जिस अवस्था में होता है वह वहां की बात करता है।

सब को राधास्वामी

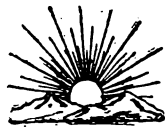

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक ११ अप्रैल १९७६

पी नाम सुधारस प्यास बुझे, आशा की अग्नी मंद पड़े ।
जो आस के फंद पड़ा प्राणी, तो जान अनाड़ी अज्ञानी ।
भव दून्द के कीचड़ में सानी, चौरासी की योनी में सड़े ।
बल बुद्धि विवेक में जो पूरा, रनधीर वीर योद्धा सूरा ।
करे मान मोह मद का चूरा, माया की रन भूमी में लड़े ।
जो खाता पीता सोता है. आलस में जन्म को खोता है ।
वह अन्त काल में रोता है, नरकों की कुन्ड में आये गड़े ।
झूठा सब भोग विलासा है, झूठा सब सैर तमाशा है ।
नर पानी बीच बतासा है, क्यों भर्म भ्रान्ति गड़े में अड़े ।
भज राधास्वामी नाम सदा, जल्दी सतगुरु की शरन में आ ।
ले नर जीवन को अपने बना. नहीं काज तेरा सारा बिगड़े ।

राधास्वामी । बैसाखी आ गई है मैं अपने आपसे पूछता हूं कि तू ने यह क्या पाखण्ड का जाल बनाया है । पाखण्ड का जाल नहीं । मेरा भाग्य मुझे संतमत

में ले आया जहां ईश्वर, परमेश्वर ब्रह्म पारब्रह्म से भी ऊंचा नाम बताया है। मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूंगा और जो मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊंगा। पता नहीं मेरा अनुभव ठीक है या ग़लत है।

पी नाम सुधारस प्यास बुझे, आशा की अग्नि मंद पड़े।

मैं अपने आपसे पूछता हूं कि क्यों भई वह कौन सा नाम है जिससे तुम्हारी आशा की अग्नि मंद पड़ जाती है? यदि किसीने यह आशा छोड़ भी दी तो गुरु के दरबार में जाने की, प्रकाश को देखने और शब्द को सुनने की आशा है। ऐ दुनियां के नाम धरियो! गुरु और महात्माओ!! मेरे प्रश्न का उतर दो। क्या राम के मिलने की आशा, मुक्ति प्राप्त करने की आशा और आवागवन से बचने की आशा नहीं है? मैं अपने आपसे पूछता हूं कि तुमने सारा जीवन राम को मिलने का यत्न किया क्या तू आशा से बरी था? सुमिरन ध्यान करता था और अब भी करता हूं क्या वह आशा नहीं? यह संसार की आशा है या स्थूल पदार्थ की की आशा है। गुरु का ध्यान करते हो या मूर्ती बनाते हो तो कोई आशा रखकर ही करते हो।

मैं अपने आप से पूछता हूं कि फकीर ! यदि झूठी बात कहोगे या किसीका पक्ष करोगे तो दुखी होके मरोगे ।

हां ! वह नाम है और अवश्य है जिससे आशा की अग्नि मंद हो जाती है । उस नाम का मुझे पता तो लग गया मगर अभीतक मुझसे उस नाम में ठहरा नहीं जाता । ऐ धार्मिक और पंथिक संसार वालो ! राधास्वामीमत वालो, हंसावालो, निरंकारियो और नानक पंथ वालो !! हो सकता है मैं ग़लती पर हूं । मुझे किसी बात का दावा नहीं ! मैं तो अपना अनुभव कहता हूं । शास्त्र भी कहते हैं कि आशा को छोड़ो और मेर तेर को छोड़ो । मेरी आयु बीत गई नाम के पीछे और मुझे नाम का पता लग गया । नाम क्या है ? पहले मैं सुमिरन करता था । सुमिरन करते समय भी आशा से बरी नहीं था । उस समय यह आशा थी कि सुमिरन से मुझे मस्ती, एकाग्रता और शान्ति मिल जायेगी । ध्यान करने में भी आशा थी । यह अवश्य है कि संसार की आशा में आनन्द भी है और दुख भी है । आनन्द की इच्छा भी आशा है । हजूर दाता दयाल जी महाराज ने लिखा है कि सब का लक्ष्य इच्छा रहित होना है । मगर इच्छा रहित

होने की इच्छा से ही तो आशा रहित बनोगे। मैं ९० साल का हो गया। पता नहीं मेरा क्या परिणाम हो। मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा और हजूर दाता दयाल जी महाराज की आज्ञा थी कि फकीर, चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। इसलिए मैं यह काम करता हूं। वह नाम क्या है जहां आशा नहीं रहती ? जब से मुझे यह पता चला कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है, उनके काम करता है, पुत्र दे जाता है, दवाईयां बता जाता है, लोगों को मरते समय ले जाता है और मैं नहीं होता तो मुझे यह सिद्ध हो गया कि जो कुछ मेरे अन्तर भी प्रकट होता है यह सब मेरे ही मन की कल्पना है। सब इसी कल्पना में फंसे हुये हैं। मैं स्वयं फंसा रहा। अब मन से आगे जाता हूं। आगे है प्रकाश और शब्द। जो वस्तु प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है उसका अपने आपमें ठहर जाना नाम की प्राप्ती है। यह मेरी समझ में आया है और गुरु नानक जी ने कहा है।

कह नानक बिन आपा चीने, मिटे न भरम की काई।

और यही स्वामी जी ने कहा है ।

आप आप को आप पहचानो, कहा और का नेक न मानो ।

अपने आपको पहचानना क्या है ? कि मैं कौन हूं । मैं वह वस्तु हूं जो प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है । जब कभी वहां अपने आपमें पहुंच जाता हूं तो फिर कोई आशा नहीं रहती । वह जो तत्व है उसमें पहुंच जाना ही नाम की प्राप्ती है । सिवाये उसके और कोई ऐसा स्थान नहीं है जहां आशा न हो । शरीर में रहता हूं तो भूख को मिटाने और गरमी सरदो से बचने की आशा अवश्य है, मन में रहता हूं तो मन कोई न कोई विचार और कोई न कोई आशा करता रहता है। केवल वही एक तत्व ऐसा स्थान है जहां आशा नहीं है । उसका पता तो लग गया मगर वहां अभी तक मुझसे ठहरा नहीं जाता । वह है नाम । तुम कहोगे कि मैं ग़लत कहता हूं । नहीं । स्वामी जी महाराज ने जेठ महीने में लिखा है कि नाम की प्राप्ती कब होती है ।

जेठ महीना जेठा भारी, जीवन हिरदे तपन करारी ।
संत दयाल जीव हित कारी, भेद कहें अब निजकर भारी ।

संत क्या भेद देते हैं ? जीवों के जब कोई आशा या इच्छा पैदा होती है तो उसकी पूर्ती के लिए उनमें तपन पैदा होती है और वह तपन तब मिटती है जब नाम मिल जाता है। मुझे नाम तो मिल गया मगर मुझसे अभी तक वहां ठहरा नहीं जाता और नाम मुझसे जपा नहीं जाता और हर समय मुझसे वहां रहा नहीं जाता। यह मालिक की मौज है। इसलिए इस आयु में मैं शरणागत हो गया हूं और अपने आपको उस परमतत्व आधार और ज़ात के हवाले करता रहता हूं और इस शरणागत होने में ही आजकल मेरा जीवन कट रहा है। यह भक्ति मार्ग है। तुम लोग आये हो। मैं अपनी ज़िम्मेदारी समझता हूं। मैं पाखण्ड का जाल बनाने के लिए गुरु नहीं बना और न ही मैं गुरु हूं। गुरु नाम है अनुभव, ज्ञान, समझ और विवेक का। जीवों की अन्तरी तपन मिटाने के लिए सन्त भेद देते हैं। क्या भेद देते हैं ?

नहिं ख़ालिक़ मख़लूक़ न ख़िल्कत, कर्ता कारन काज न दिक्कत
द्रष्टा दृष्टि नहिं कुछ दरसत, बाच लक्ष नहिं पद न पदारथ।

जो लोग कहते हैं कि वहां हम को यह दिखाई देता है वह दिखाई आता है। वह तो लक्षपद नहीं है और न ही वह नाम की प्राप्ती है। यह मेरा अनुभव है।

ज़ात सिफ़ात न अव्वल आखिर, गुप्त न परघट बातिन जाहिर।
राम रहीम करीम न केशो, कुछ नहिं कुछ नहिं कुछ नहिं था सो।

मेरे अन्तर वह वस्तु जो प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती है और शब्द में रहती हुई शब्द को सुनती है जब वह अपने रुप में चली जाती है तो फिर न खलकत न खालिक और न मखलूक। वह है परमतत्व अधार, अकालपुरुष। उसका कोई नाम रखलो। रामा रामी कहलो, कामा कामी कह लो। वह है हमारा आद। जिसकी सुरत इकट्ठी होकर वहां पहुंच जाती है उस अवस्था का नाम, नाम की प्राप्ती है।

सिम्रित शास्त्र न गीता भागवत, कथा पुरान न वक्ता कीरत।
सेवक सेव न दास न स्वामी, नहिं सतनाम न नाम अनामी।

अब तुम सोचो कि जो कुछ मैंने कहा है वह ठीक है या ग़लत है। वहां न सतनाम है और न

अनामी है। वह क्या है ? उसको संसार की कोई भाषा वर्णन नहीं कर सकती।

जिन खोजा तिन पाया गहरे पानी पैठ।
हौं भौरी ढूंडन चली रही किनारे बैठ।

मैंने सारा जीवन खोज की। सात वर्ष की आयु से चला था और अठारह वर्ष की आयु में पंथ में आया था और आज इस वक्त में ७१ साल बीत गये।

पी नाम सुधारस प्यास बुझे, आशा की अग्नी मंद पड़े।

आशायें कब समाप्त होती हैं ? जब आदमी अपने रूप का ज्ञान प्राप्त कर जाता है। मुझे इस ज्ञान का पता नहीं लगता था। मैंने हज़ूर दाता दयाल जी महाराज से बहुत प्रेम किया, आरतियें की, थूक खाये और तलवार की धार पर जीवन व्यतीत किया। छोटी आयु में काम अंग के कारण ग़लती भी खाई लेकिन जीवन में और कोई बुराई नहीं की। मैंने अपने निजी स्वार्थ के लिए कभी कुछ नहीं किया। आप लोग आये हैं। मैंने अपना अनुभव बता दिया कि नाम क्या है मगर हर एक आदमी नाम का अधिकारी नहीं है।

जो आस की फंद पड़ा प्राणी, तू जान अनाड़ी अज्ञानी।
भव द्वन्द के कीचड़ में सानी, चौरासी की जोनो में सड़े।

जब तक आस है तब तक चौरासी की योनी है। होगी। मैं तो चौरासी की योनी यह समझता हूं कि ६ चक्कर शरीर के और ६ चक्कर मन के। कुल बारह हुये। पांच कर्म इन्द्रीयें मन और बुद्धि। कुल सात हुये। अब $12 \times 7 = 84$ हुये। हमारा जीवन २४ घण्टे में कभी किसी स्थान पर और कभी किसी स्थान पर रहता है। इन चौरासी प्रकार के लक्ष स्थानों में हमारी सुरत हर समय फिरती रहती है। मैं इसको चौरासी लाख योनी समझता हूं। यदि और कोई ८४ लाख योनी है तो मुझे पता नहीं। मैं तो यह समझता हूं कि क्योंकि आदमी को शान्ति नहीं है कभी खुशी, कभी ग़मी, कभी कुछ और कभी कुछ। २४ घण्टे यही दशा रहती है। तो मैं इसको ८४ लाख योनी समझता हूं।

बल बुद्धि विवेक में जो पूरा, रनधीर वीर योद्धा सूरा।
करे मान मोह मद का चूरा, माया की रन भूमी में लड़े।

जो आदमी समझ और विवेक रखता है और अपने मन के विचारों को वश कर सकता है वह ना को प्राप्त कर सकता है। दूसरा नहीं! मैं नहीं

कर सकता था। मैं हजूर दाता दयाल जी महाराज के चरणों में गया था। उन्होंने फरमाया था कि फकीर ! तुमको सच्चा राधास्वामी दयाल सत्संगियों के रूप में मिलेगा तो अब आप सत्संगियों की दया से जब से मुझे यह समझ आई कि मैं किसी के अन्तरे नहीं जाता तो जब कभी मेरे अन्तर कोई तरंग उठती है जो मेरे लिए दुख का कारण बने तो इस ज्ञान के कारण मैं उसमें फंसता नहीं। गुरु हर समय रक्षा करता है मगर उनकी रक्षा करता है जिनको गुरु मिल गया हो। गुरु नाम है समझ विवेक और ज्ञान का। गुरु किसी आदमी का नाम नहीं है। लेकिन जिस पवित्र विभूति से तुमको यह वस्तु मिल जाये तुम्हारे लिए वही गुरु है। उसका उपकार बाकी रह जाता है। क्योंकि तुम लोगों से मुझे यह ज्ञान मिला इसलिए मैं तुम लोगों को अपना सच्चा सत्गुरु समझ कर तुम्हारी मान प्रतिष्ठा और सेवा करता हूं और इसी ज्ञान की तलवार से मैं माया की रणभूमि में लड़ता हूं। मैं गृहस्थी हूं जब कभी कोई विचार जो मेरे दुख और सुख का कारण बनता हो तो मैं उसको अपने ऊपर प्रभावित नहीं होने देता।

जो खाता पीता सोता है, आलस में जन्म को खोता है।
वह अन्त काल में रोता है, नरकों के कुण्ड में आये पड़े।

जिसको ज्ञान नहीं मिला उसका मिशन ही यही है कि संसार में खाओ, पीओ और मौज करो, धोका और फरेब करो, प्राई स्त्रियों को देखो आदि २ मगर इसका परिणाम दुख होता है। कई आदमी जब मरने लगते हैं तो उनके बुरे विचार और बुरे कर्म शकलें बनाकर उनके सामने आते हैं और उनको डराते हैं। लोग कहते हैं कि यमराज आकर डराते हैं। यमराज क्या है? हमारे बुरे विचार ही शकलें बनाकर हमारे सामने आते हैं और हम उनसे डरते हैं। यही यमराज है, बाहिर से कोई नहीं आता। तुम्हारा मन ही यमराज बन कर तुम्हारे सामने आता है। हर रोज़ कितने ही आदमी, हैवान, कीड़े मकोड़े और जीव जन्तु मरते हैं तो ईश्वर के पास कितने यमराज होंगे जो प्रतिदिन कई मरने वालों को ले के जाते हैं? यह सब भ्रम और अज्ञान है। नर्क और स्वर्ग क्या है? गन्दे विचार या हमारे बुरे कर्म जब शकल बनाकर अन्त समय हमारे सामने आते हैं तो हमको उनसे डर लगता है और हम दुख मानते हैं यह नर्क है और

और हमारे अच्छे बिचार और अच्छे कर्म शकलों के रूप में हमारे सामने आते हैं उनसे हम सुख लेते हैं और खुश होते हैं, यह स्वर्ग है। हमको कोई सच्चाई नहीं बताता। कई आदमी पवार चले जाते हैं अर्थात बेहोश हो जाते हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि इसका अन्त समय आ गया हैं। लेकिन थोड़े समय के बाद वे भी होश में आ जाते हैं और स्वस्थ्य हो जाते हैं। फिर वे अपने हालात बताते हैं किसी को कोई दृश्य और किसी को कोई दृष्य दिखाई देता है। मेरी माता जी बताया करती थीं कि एक बार मैं मर गई और मुझको ले जाकर एकबूढ़ी स्त्री के सामने पेश किया। वह कहने लगी कि यह वह पारबती नहीं है। जो पारबती फलां मुहल्ला में रहती है उसको लाओ। मुझे मक्की की आधी रोटी और साग दे दिया और कहा कि तुम जाओ, अभी तुमने और जीना है। अब तुम सोचो कि मक्की की रोटी का बिचार क्यों आया? क्योंकि हम गरीब थे और मक्की खाया करते थे। मेरी माता जी के दिल में वही संस्कार था। सतगुरु का कर्तव्य है सतज्ञान देना। इसके सिवाय जो कुछ भी तुमको मिलता है वह तुम्हारे कर्म और तुम्हारे विश्वास का

फल है। क्योंकि मैं समय का संत सत्गुरु हूं इसलिए मैं अपना कर्तव्य पूरा कर जाना चाहता हूं। तुम सुनो या न सुनो या अमल करो या न करो, यह तुम्हारी इच्छा है मुझे क्या ? यदि कुछ करोगे तो अपने लिए करोगे। मुझ पर कोई उपकार नहीं है। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने यह मेरा कर्तव्य लगा रखा है।

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेसा।
दुखी जीव को अंग लगाकर, लेजा गुरु के देसा।
तीन ताप से जीव दुखी हैं, निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी॥

गुरु का देश क्या है ? यह मैंने तुमको बहुत अच्छी तरह बता दिया है। फिर सुन लो।

"अकह अपार अगाध अनामी"

वह है गुरु और वही हमारा देश है।

झूठा सब भोग विलासा है, झूठा सब सैर तमाशा है।
नर पानी बीच पतासा है, क्यों भर्म भ्रान्ति गड्ढे में अड़े।

झूठा क्या है ? एक वस्तु आज है कुछ समय के बाद नहीं रहती। आज शरीर है कल को नहीं रहेगा और यह संसार भी नहीं रहेगा। समय आता है और

प्रलय हो जाती है। काल का चक्कर चलता है और सब कुछ नाश हो जाता है। हमने संसार को सत माना हुआ है। सदा रहने वाली यहां कोई वस्तु नहीं! एक दिन समाचार पत्र में आया था कि अमुक स्थान को खोदने से हज़ारों साल पहले के मुर्दे और हड्डियें निकली। आदमियों के आठ २ फुट लम्बे पिंजर मिले। यह सब कुछ नाशवान है। लेकिन हम इनको सत माने बैठे हैं और हाय हाय करते हैं। युग बदलता रहता है।

भज राधास्वामी नाम सदा. जल्दी सतगुरु की शरन में आ।
ले नर जीवन को अपने बना, नहीं काज तेरा सारा बिगड़े।

सच्चे ज्ञान की शरन में आ। जिसको जहां से भी सतज्ञान मिल जाता है उसके लिए वही सत्गुरु है। एक आदमी तो सारे संसार को चेला नहीं बना सकता और न ही सारा संसार एक आदमी से लाभ उठा सकता है। तुमको जहां से भी सतज्ञात मिले। ले लो। वही तुम्हारा सत्गुरु है। नर जीवन को बनाना क्या है? जीवन को चिन्ता रहित, शोक रहित और आनन्द से व्यतीत करना। और यही लक्ष्यपद है। जीवन को चिन्ता रहित और खुशी से व्यतीत

करने के लिए कोई किसी चक्कर में है और कोई किसी चक्कर में है। गुरु आता है और जीव को उसकी प्रकृति अनुसार उपाय बताता है। तुम नाम जपते हो मगर हाय हाय भी करते हो और चिन्ता करते हो। तो क्या नाम जपा तुमने ? हम जो कुछ भी करते हैं यह सुख आनन्द और शान्ति के लिए करते हैं। चिन्ता रहित और शोक रहित होने में आनन्द है। गुरु नानक साहिब जी महाराज ने भी यही कहा है।

"निर्भौ निर्वैर अकाल मूरत अजूनी से भंग"

हमने इस मंज़िल को प्राप्त करना है चाहे किसी भी विधि से करो। तातपर्य तो चिन्ता रहित और शोक रहित होकर जीवन व्यतीत करने का है। यही जन्म को बनाना है और यही लक्ष्यपद है। जिसको यह प्राप्त है उसको अभ्यास करने की आवश्यकता ही क्या है। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने एक शब्द में लिखा है :-

जिसके मन नहिं चिन्ता व्यापै, जग में वही है दास फकीर।
अभय रहे चित गुरु पद राखे, धीर बीर गम्भीर।
शान्त भाव व्यवहार परमार्थ, कभी न हो दिलगीर।
अपनी पीर न उर में साले, लखे पराई पीर।

मुझे पंथ का भ्रम था। किसी को कोई भ्रम होता है और किसी को कोई। गुरु जीव को प्रकृति अनुसार उसको उपदेश करता है। इसीलिए मैंने मनुष्य बनो की आवाज़ उठाई है।

पर की पीर न जिसे सतावे, सो अधर्मं बे पीर।
अपना रूप संभाले पल पल, काटे मोह जंजीर।
यह फकीर है गुरु को प्यारा, महावीर चित धीर।

अपना रूप क्या है? कि मैं कौन हूं। मैं वह वस्तु हूं जो प्रकाश और शब्द में रहती हुई प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। मैं आधार हूं। मुझे इस ज्ञान से नाम की प्राप्ती हुई मगर अभी तक वहां ठहरा नहीं जाता ये मेरे कर्म हैं या मौज मालिक है। मैं नाम को समझ गया। महावीर बहादुर होता है और वह मन के साथ जूझता है।

चाह गई चिन्ता सब भागी, आया भव निधि तीर।
हंस रुप धर त्याग नीर को, गह लिया ज्ञान का क्षीर।
राधास्वामी गुरुका सच्चा बालक, पहिर विराग का चीर।
तन के रहते मुक्त विदेही, सहै न द्वन्द शरीर।

मुझे भेद का पता लग गया कि असलियत क्या है। जो कुछ मैंने जीवन में सीखा वह आप लोगों को बता दिया। हजूर दाता दयाल जी महाराज की

आज्ञा थी कि शिक्षा को बदल जाना और हज़ूर बाबा सावनसिंह जी महाराज ने फरमाया था कि फकीर ! निर्भय होके काम करो मैं तुम्हारा संरक्षक रहूंगा। जो कुछ मेरी समझ में आया वह मैंने कहा। ग़लत है या ठीक है इसका मुझे पता नहीं। मेरा जीवन सच्चाई की खोज में बीत गया। मेरी बात यदि अच्छी लगती है तो इस पर अमल करो। यदि नहीं अच्छी लगती तो बेशक मत करो। यदि परदा रखता तो जितनी इच्छा धन इक्ट्ठा कर लेता। अब कौन देता है। सच्चाई बताने से यह हानि है। हस्पत.ल खोल बैठा। सवा लाख के लगभग हस्पताल का सालाना खर्च है। यदि चला तो चलाऊंगा वरना बन्द कर दूंगा। बात सच्ची बता दी। मैं हेर फेर करके बात नहीं करता।

सब को राधास्वामी

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर।

दिनांक १५-१०-७६

आज दाता दयाल जी महाराज का शब्द पढ़ा गया।

सुना पढ़ा समझा समझाया, ज्ञान हाथ नहीं आया।
जब सतगुरु ने आन चिताया, सहज ही वह धन पाया।
कथनी कथै सो दूर है हम से, करनी करै सो साथी।
रहनी रहे सो गुरु हमारा, रहनी हमको भाती।
गुरु की खोज करो सतसंगत फिर, करनी चित लाओ।
करनी का फल उदय होवे, जब रहनी जाय समाओ।
सतसंगत में श्रवण मनन है, अनुभव में है रहनी।
ये निध्यासन समझो प्यारे, त्यागो मुख की कहनी।
कहनी तो है भरम कहानी, भरम की समझो रवानी।
राधास्वामी भेद बतावें, करनी है सुख दानी।

राधास्वामी !

यह शब्द सुना। इस शब्द को मैं अपने जीवन पर

घटाता था। मैंने रामायण भागवत पढ़ी, जब संतमत में आया संत कबीर की वाणियां पढ़ीं, सारवचन नज़म पढ़ा, हुजूर साहिब की प्रेम वाणी पढ़ी। क्या इन सबके पढ़ने से मुझे वास्तविकता, सार और शांति की प्राप्ती हुई ? नहीं। शांति व सच्चाई कब मिली ? जब गुरु ने आकर चिताया। मेरे गुरु तुम सत्संगी हो, तुमने कहा, तुमने चिताया कि मेरा रूप तुम्हारे अंतर जाता है। तुम्हारे काम बनाता है तब मुझे ज्ञान मिला।

सुना पढ़ा समझा समझाया, ज्ञान हाथ नहीं आया।

क्या ज्ञान मिला व वह ज्ञान क्यों बताता हूं ? इसलिये बताता हूं कि अपने अनुभव को बयान कर जाने का प्रण किया था। मेरा जीवन खोज में गुज़रा है। दया तो दाता दयाल जी की है। उनके पास न जाता तो कुछ भी न मिलता। मुझे ज्ञान मिला कि न मैं मन हूं न प्रकाश हूं न मैं शब्द हूं, इन सबसे परे जो वस्तु है जो इन सब की साक्षी है वह हूं। यह ज्ञान मिलना गुरु की दया है। आप मेरे सतगुरु हैं। यह वैद्य जी मुल्लांपुर से आये, मेरे लिये दवाई बनाकर लाये हैं, पैसे नहीं लेते मुफ्त दी है। क्यों ?

इसलिए कि प्रेम करते हैं। यह प्रेम करना इनकी करनी है। तुम्हारे दिल में भगवान या गुरु सेवा का भाव पैदा होता है। यह तुम्हारी करनी का प्रारम्भ है। इसके बाद जो कुछ अंतर में चलने की बात गुरु के बताने से करोगे वह तुम्हारी अमली ज़िन्दगी होगी। अन्तर में चलने वाले को धीरे धीरे मालूम होता है कि यह सब तो मनका झगड़ा है और जब सुरत ऊपर जाकर ठहरने लगती है तब शांति की प्राप्ती होती है।

जब सतगुरु ने आन चिताया सहज ही वह धन पाया।

मैं दाता दयाल जी के चरणों में गया, उनसे प्रेम किया, उन्होंने मुझे नाम दिया, वह नाम मैंने जपा, रहस्य का पता नहीं लगता था। उन्होंने कहा था सच्चा सतगुरु तुमको सत्संगियों के रूप में मिलेगा। अब आप लोगों से ज्ञान मिलने पर दाता की आज्ञा के अनुसार यदि मैं आपका मान व आपकी इज्जत नहीं करता तो बताइये मैं गुरु द्रोही होऊंगा या नहीं? दाता जी के दरबार में कुदरत ने भेजा। मैंने उनसे प्रेम किया। उनकी किताबें पढ़ी, संगत की, क्या ज्ञान मिला? नहीं। ज्ञान तो तुम लोगों से मिला।

और दाता की दया से मैं इस ओर चला। करनी मैं करता हूं। मगर मैं करनी को छोड़ना चाहता हूं। एक दिन तो करनी छूटेगी ही ? मेरा सेवक गोपाल दास कहता है कि आप तो सत्संगियों को गुरु मानते हो उसको कहता हूं भाई, क्या दाता जी की आज्ञा न मानूं ?

दाता जी ने सन १९१९ में यह गुरु का काम मुझे दिया तब कहा था जो तू अपने अंतर में देखता है, बाहर देखता है, जो तेरी फुरनाएं हैं वह सब हैं नहीं भासती हैं, वह सब माया हैं। यही ज्ञान दाता का आपको देता हूं। इसलिए मैं सतगुरु हूं। दुनियां इस ज्ञान के लिए आती नहीं। लोग तो धन, पुत्र, शोहरत, मान, ममता के लिए आते हैं। आप लोगों के लिए यह मंदिर बना दिया। हेरा फेरी मत करो, गृहस्थ कम भोगो, अपनी रहनी करनी को देखो समझो सुधारो, शिव संकल्प रखो, विचार अच्छे रखो। मैं अपने कर्तव्य के अनुसार ऊंची बात कहता हूं।

कथनी कथे सो दूर है हमसे, करनी करे सो साथी।
रहनी रहे सो गुरु हमारा, रहनी हमको भाती।

गुरु की खोज करो सतसंगत, फिर करनी चित लाओ।
करनी का फल उदय होवे जब, रहनी जाय समाओ।

करनी का फल क्या है ? मैं नाम जपता था, ध्यान करता था, प्रकाश व शब्द में जाता था, यह मेरी करनी थी। इस करनी का फल आप सत्संगियों से मिला। अब मैं मन, चित, बुद्धि, अहंकार, शब्द व प्रकाश से परे चला जाता हूं। किंतु मैं वहां ठहर नहीं सकता, मगर मैं वहां पहुंच गया। सब कुछ मेरा बदल गया है, जिंदगी वदल गई है।

सत संगत में श्रवण मनन है, अनुभव में है रहनी।

'अनु' 'भव' अनु अपने आपको कहते हैं, भव कहते हैं रहने को व अपने आप में ठहरने को। अपने आप में ठहरने का नाम ही अनुभव है। अनुभव क्या है इसका वाणी से वर्णन नहीं किया जा सकता। जिस तरह स्त्री के साथ संभोग के आनन्द या गुड़ के मीठे पन का वर्णन कोई कैसे भी कहे बगैर भोग किये या खाये समझ में नहीं आता। भोग के लिए विवाह और स्त्री की जैसे जरूरत है, गुड़ के स्वाद के लिये गुड़ का मुंह में रखना जरूरी है। इसी प्रकार अनुभव का स्वाद वे ही जान सकते हैं

जिन्होंने साधन अभ्यास करके उसे पाया है। अकली लाभ सतसंग से प्राप्त हो जाता है। आज का गुरुमत गुरु डम है। गुरुओं ने हमारे साथ धोका किया है। हमारे साथ ठगी की है। जो हम ठगे गये वह ठीक भी है, हम तो सार ज्ञान के लिये गये नहीं। बेटों के लिये धन के लिये, माया के लिये गये थे।

ये निध्यासन समझो प्यारे. त्यागो मुखकी कहनी।
जबानी बातें छोड़ो अमल करो।
कहनी तो है भरम कहानी, भरम की समझो खानि।

कहना भी भ्रम है, कहना सुनना दोनों भ्रम हैं। हरकत में भ्रम है, सिर्फ निजरूप में शांति है।

राधास्वामी भेद बतावें करनी है सुखदानी।

मैं कभी कभी अपने को राधास्वामी दयाल या कबीर भी कह देता हूं इसका यह मतलब नहीं कि राधास्वामी दयाल या कबीर मुझमें आ गये। मैं ऐसा जब कहता हूं तो ग़लती नहीं करता क्योंकि मैं उनकी शिक्षा के सार को बताता हूं। साफ साफ समझाता हूं। मैं अहंकारी नहीं हूं। मेरे अपने को कबीर या राधास्वामी दयाल कहने के दो लाभ हैं। एक तो यह कि जो मुझे अहंकारी समझेंगे वे मुझे छोड़ कर

चले जाएंगे। मेरा उनसे पीछा छूट जायगा, दूसरे ऐसा कहने से जो वास्तविक सतज्ञान के अभिलाषी होंगे, जिज्ञासु होगे उन्हें सतज्ञान की प्राप्ती हो जावेगी। अपने आप में मगन हो जावेंगे।

सबको राधास्वामी !

'आनन्द है जीवन में'

लेखक :—सेठ दुर्गादास साहिब (चन्डीगढ़)

आशा है तो जीवन कायम है। आशा में आनन्द है। आशा के बिना जीवन ही नहीं। आशा नहीं तो आनन्द भी नहीं। अतः कहा गया है कि "दुनियां वा उमीद कायम अस्त" दुनियां का आधार आशा है। इन्सान के जीवन का सफर किसी आशा के सहारे काटता है और इस आशा में वह खुश रहता है। इसको तसल्ली है। वो अपना हर काम तसल्ली से करता है क्योंकि सफलता की झलक इसको अपने हर काम में दूर से दिखाई पड़ती है। यह सफलता की झलक इसको लक्ष्य तक खींच ले जाती है।

मानव जीवन का कोई उद्देश्य है, कोई मुद्धा है, सबका लक्ष्य एक है गो मार्ग अनेक हों। न जानते हुये प्रत्येक प्राणी उद्देश्य की ओर खिचा जा रहा है। कोई किसी मार्ग पर चलकर खुशी लेता है। किसी को किसी मार्ग पर चल कर राहत मिलती है। एक

आदमी सोचता है, सन्तान पैदा होगी इसका पालन पोषण करूंगा, प्यार करूंगा, उसे पढ़ाऊंगा, वह नेक होगी, वह उन्नति करेगी। संसार में मुझे यश मिलेगा, वह मेरे जीवन का सहारा होगा।

दूसरा कारोबार करता है कारोबार में व्यस्त है, खूब परिश्रम करता है, सारा दिन काम में लगा रहता है, भूख तथा थकावट की परवाह नहीं करता। सफलता नज़र पड़ती है। लाभ होगा। धन मिल गया लेकिन अभी मन की तसल्ली नहीं हुई। और आगे बढ़ा तथा कोशिश करने लगा। यह जिन्दगी है। फैला और खूब फैला। कारोवार खूब चमका अब लाखों में खेलता है, इसके लिये यह जीवन है। यह जीवन का आनन्द है। उत्साह है हिम्मत है तो जीबन है।

जीवन ठहरने का स्थान नहीं है। चलने में जीवन है, सफर में जीवन है, एक स्थान पर ठहरा पानी बदबूदार हो जाता है। बन्द कमरे की वायु गन्दी हो जाती है। अगर जीवन मिला तो खूब खेलो। शरीर व्यस्त रहे। मन व्यस्त रहे। काम में लगन रहे यह अध्यात्मिकता है। कर्म से ज्ञान होता है।

उठो, चलो, फिरो, तुम फलत को तर्क कर दो।
मंजिल में खुद मिलेगी, तुमको स्कूनो राहत॥

आप प्रकृति को देखो। ज्योंही सूर्य निकला संसार में जीवन आ जाता है। चारों ओर चहलपहल का दृष्य है। कोई ग़फलत की नींद में नहीं है सब होश्यार हो गये। निजी कार्यों में लग गये। संसार जीवित है। जीवन व्यस्तपने का नाम है। मशगूल हो तो जीवन है। नाकारा इन्सान जो सुस्त और बेकार हो उसका भी कोई जीवन है? ज़माना उस इन्सान का साथ देता है जो जमाने के साथ चलता है। सफलता का सेहरा उसके सिर पर वांधा जाता है जो अपने काम में लगा रहता है। काम को अपना समझ कर करो। तो काम तुम्हारा साथ देगा, परिणाम नेक होगा। लाभ होगा और नाम होगा। यदि काम में आपका दिल नहीं है तो काम भी आपको जवाव दे देगा। संसार में जीवन का आनन्द कभी नहीं मिलेगा। "*Work is worship*" कहा गया है कि "काम को खुदा की पुजा समझो" ईश्वर का काम समझ कर करो।

अर्थात जो काम आप को करने के लिये मिला है ईश्वर की देन है। ईश्वर का अपना है, फिर आप इस

काम को ईश्वर की पूजा समझोगे। ऐसी आदत बना लो परिणाम आश्चर्य जनक होगा। मैं यह क्रियात्मिक बात कह रहा हूं। कभी यह मत समझो कि वेतन के वदले काम कर रहे हो। ऐसा विचार दिल से निकाल दो। कुछ दिनों में इस बात की बरकत आपका दिल महसूस करेगा।

काम खुदा की इबादत है। ज्ञानी ध्यानी योगी सन्त और महात्मा सुमिरन और ध्यान से अपने मन को एकाग्र करते हैं। एकाग्रता में आनन्द है। यही इनकी पूजा है। अगर आप अपने काम में तन मन से व्यस्त हो जाओ कि समय का पता न रहे। आपका मन एकाग्र हो जायेगा। इसलिए काम इबादत है।

आइये आपको महर्षि जी का कलाम सुनाते हैं। पढ़िये आप जिन्दगी के बारे में क्या फरमाते है।

(१) जिन्दगी जिन्दा दिली का नाम है, गर नहीं जिन्दा दिली बे काम है

(२) सुबह दम रोशन हुआ जब आफताब, है जमीनों आसमान में आबो ताब।

(३) साथ इसके आ गई है जिन्दगी, जिन्दगी क्या है वो है खुरसंदगी

(४) फूल खिल जाते हैं सब हैं जागते, मुरदनी के कुल असर हैं भागते ।

(५) काम में लग जाती है मखलूक सब, जिन्दगी मन्ज़र दिखा जाती है तब ।

(६) सबके सब मसरूर और दिल शाद हैं, जिन्दगी का घर मिला आबाद हैं ।

(७) जिन्दगी का नाम है मसरूफियत, है यहि मसरूफियत मसरूफियत ।

(८) राज़े उर्फा इसी ही में मसतूर है, जो है जिन्दा काम में मसरूर है

(९) शाने हक इनको न आयेगी नज़र, जो पड़े ग़फलत में रहते हैं बशर ।

(१०) छोड़ो ग़लफत नींद से होशियार हो, देखे मन्ज़र हक का जो बेदार हो ।

पत्र व्यवहार द्वारा ज्ञान

कुबेर ! राधास्वामी

आपका पत्र मिला, जिसको जिस ख्याल से जिस विचार में शांति मिले उसके लिये वही धर्म या मज़हब ठीक है। आपका खत मैंने पढ़ा, गौर से पढ़ा। मैं आपके ख्याल से आपके लिए आपके विचारों का समर्थन करता हूं। अब मेरा हाल सुनो ! मुझे शांति कहां मिलती है ?

छोटी उमर से राम को मिलने का ख्याल पैदा हुआ। मूर्तियां पूजीं। ज़ाति अनुभव ने मूर्तियां छुड़ाईं। राम या कृष्ण को मालिक का रूप मान कर पूजने लगा एक दिन कृष्ण की मूर्ति जो मेरे आगे आगे दौड़ रही थी। उसने कहा गोबर खाले मैंने गोबर खाया। होश आई ख़्याल आया कहीं वर्णन नहीं है कि किसी ने अपने भक्त को गोबर खाने को कहा हो। २४ घण्टे रोया, ऐ भगवान ! जैसे तू अवतार लेकर दर्शन देता था। मुझे भी आदमी के रूप में

दर्शन दे। एक दृष्य था २४ घण्टे रोने के बाद मेरे सामने आया, जिसने यकीन दिलया कि वो मालिक दाता दयाल के रूप में आया हुआ है। इस घटना के दो वर्ष पहले भी मुझे जब मैं मियाणी में रात को एक बार जंगल में रोता फिर रहा था एक सफेद बुज़ुर्ग ऋषी जिनके हाथ में दुतारा था मिले थे उन्होने पूछा था क्यों रोते हो ? मैंने कहा था भगवान को मिलना चाहता हूं उस बुजुर्ग ने कहा था इसी जन्म में मिल जायगा। यह घटना १९०४ की है। उन्होने यह भी कहा था अवतार लेकर आया हुआ है। दाता के रूप प्रगट होने से इस घटना से विश्वास हो गया कि दाता दयाल जी मालिक के अवतार हैं।

दाता दयाल ने यह राधास्वमी मत या यह संतमत मुझको दिया। चूंकि राधास्वामी मत में भी स्वामी जी को मालिक का अवतार माना गया है मेरा और भी निश्चय दृढ़ हो गया। नाम मिला था। १९०५ से १९१६ तक सिवाय प्रेम के ब रोने के मुझे कुछ भी नज़र नहीं आया-बसरे बगदाद चला गया, वहा साधन किया-मानसिक व शरीरिक ब्राह्मचर्य के कायम होने की वजह से इस संतमत के साधन

के तमाम दर्जों से गुज़रा-मगर मन के जो ऐब थे-१९२९ में जब मैं घर वापस आया वे फिर फुरने लगे, स्त्री से स्वाद के लिये काम भोगता रहा। मातहतों के गलती करने पर क्रोध भी आता था-नाजायज़ कमाई नहीं की किन्तु इच्छा रहती थी कि तरक्की होवे। दुःखी हुआ अपनी गिरावट का कारण ज्ञात नहीं होता था। आवाज़ आत्मा से आई कि तुझमें काम है। संभला फिर भी यह जो मेरे मन व अन्तर संसार बनता था सपन देखता था, दृष्य आते थे उन में मेरी तवज्जो समय २ पर दुःख सुख उठाती रहती थी। यह सिलसिला २९२९ तक रहा, जब तक दाता दयाल जी का चोला रहा। फिर सत्संगियों के तजर्बों ने कि मेरा रुप उनकी मदद करता है, जागृत में सपन में समाधी में, अंत समय में लेने जाता है और मुझे कोई पता नहीं होता इससे मुझे विश्वास हो गया कि मेरे अंतर जो भी प्रकट होता है, सहस दल कमल के नज़ारे, त्रिकुटी के तमाशे, सुन्न की मस्ती सभी मुझको माया साबित हुई, ये सब संस्कार थे। थे नहीं भासते थे। कृषक, दयाल दास, समालपुर वाली माई व और भी अनेकों सतसंगियों ने लिखा व कहा कि उनके

अंतर मेरा नूरानी रूप वे देखते हैं व उसमें से तेजोमय किरणें निकलती हैं। हज़ारी सिंह सूवेदार से भी कथाएं सूनता रहा। उनके अनुभव सुने। वह मैं तो था नहीं मेरा साधन मन की तमाम वृत्तियों को छोड़कर केवल अंतर का प्रकाश व शब्द रह गया। शब्द भी न घंटा न शंख है, न ॐ है न रारंग सारंग है न बीन है। ये सब शब्द मैंने बसरे बगदाद में सुने। जिस शब्द को मैं अब सुनता हूं वह न टूटने वाला है। एक रस है। उसमें रहता हूं, न दुनियां है न दुनियां का कारोबार है न दाता की मूरत वहां है न उनकी याद है।

अब इतना साधन होने पर भी जब मैं बीमार होता हूं या कोई ऐसी घटना मंदिर या समाज में घट जाती है जो मेरे विचारों के विरुद्ध होता है तो मैं अपनी विवशता मानता हूं व ऐसे चक्करों को मैं दूर नहीं कर पाता। मैं न सही, दाता की धाम उजड़ी, दाता स्वयं पिछले दिनों २० दिन बीमार रहे, राधास्वामी दयाल दो वर्ष कष्ट भोगते रहे, बाबा सावन सिंह जी का हाल देखा, पलटू साहब और गुरु अर्जुन देव पर क्या बीती, तो मजबूर हुआ ढूढ़ने को कि सुख शांति कहां है? माना कि समाधी में हमें

सुख दुःख नहीं सताता। मगर २४ घण्टे कौन समाधी में रहता है ? फिर मैं किस नतीजे पर आया हूं, कि ऐ इंसान ! इस दुनिया बनाने वाले की लीला अपरम्पार है, किसी को उसका पूरा भेद नहीं मिला।

अब मैं क्या करता हूं ? शरणागतं। किसकी शरण ? वह जो सबका मालिक है। जिसमें से यह शब्द प्रकाश निकलते हैं, जिसके आधार पर लोक लोकांतर खड़े हैं। इस शरणागति में समय काट रहा हूं। मेरी इच्छा है कि जब शरीर छूटे तो शरीर से बाहर निकल कर बता सकूं क्या परिणाम हुआ। पता नहीं कि मैं यह कर सकूंगा या नहीं। मेरी जिन्दगी ने कुबेर, पलटा खाया।

दाता जी ने तालीम बदले जाने को कहा था बदल चला 'ऐ इंन्सान ! तू इस भरोसे मत रह कि तू शब्द अभ्यास करता है। तू भक्त है। तुझको जो मिलता है, मिलेगा, मिल चुका है यह तेरा अपना कर्म है। पिछले कर्म तो कोई काट नहीं सकता। हां विश्वास श्रद्धा व समझ से हम पर जो बीतता है उसको हम कम मेहसूस कर सकते हैं। आइंदा नाम जप, भगवान को याद कर। मगर इस भरोसे न रहो

कि नाम जपते व उसे याद करते हो तो कर्म भोग से बच जावोगे यह नामुमकिन है। सभी को ऋषि, संत व अवतारों को कर्म भोगना पड़ा है।

मैं भी कभी सेल्फ *Self* को देखता था, सेल्फ की बड़ी इज्जत करता था मुझे विश्वास हुआ है कि *Self* सेल्फ एक बून्द है। इसमें अज्ञान के कारण मैं आ गई। कभीयह अनलहक की सदा देती है, अहंब्रह्म की सदा देती है, अहं सत्यं की सदा देती है, व कभी अनतुलहक या तू तू में दीन होती है। शरणागत होते होते कभी मास दो मास में ऐसी भी अवस्था आ जाती है जहां न मुझे अपनी होश होती है न दुनियां न यादे खुदा न दाता दयाल की याद होती है। चाहता हूं मैं वहां सदा रहूं मगर रहा नहीं जाता। इसलिये मुझे इस उमर में कोई सहारा है तो शरणागत में है। अपने सारे अहं-भावों को छोड़ता जा रहा हूं।

ये जो काम करता हूं यह मेरे प्रारब्ध कर्म हैं, कबतक हैं पता नहीं। मुझे यश मिलना था बहुत मिला। किसी को कुछ कह देता हूं वह पूरा हो जाता है मैं समझता हूं उनका विश्वास है। लोग प्रसाद ले

जाते हैं स्वस्थ हो जाते हैं। मैं स्वयं बीमार होता हूं डाक्टरों के पास दौड़ता हूं। हौश आती है दाता का व सत्संगियों का अहसान मानता हूं। आपने मेरी काफी मदद की है खुश रहो। चूंकि लोग कहते हैं बाबा, जो तू कहता है हो जाता है। इसलिये कुबेर, मैं चाहता हूं कि तुम्हें बुढ़ापे में कोई कष्ट न हो। सेहत मिले, दौलत मिले, मन को शांति मिले। मरने के बाद का पता नहीं मुझे कि मेरे साथ क्या होगा तो तेरे लिये क्या कहूं ?

दाता दयाल ने तालीम बदल जाने को कहा था वह बदल चला। पता नहीं मैंने ठीक किया या गलत किया ?

आपका फकीर !

मेरा कर्म

सहायक मन्त्री मानवता मन्दिर ने फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट का हिसाब दिखाया, उसने कहा कि आंखों का हस्पताल खुलने के बाद मन्दिर के कुल व्यय के लिए कम से कम 135000/-रुपया की धन राशि प्रति वर्ष चाहिए। सुना, रात को अपने अन्तर सोचा कि ऐ फकीर। तू ने यह क्या किया ? एक गढ़े से निकला और दूसरे कुऐं में गिरा। मगर अपना जीवन याद आता है। मुझको बचपन से ही किसी वस्तु की तलाश थी वह मुझ को दाता दयाल महर्षि शिव ब्रत लाल जी महाराज के चरण कमलों में ले गई। उस पवित्र विभूति ने मेरी उस तलाश को मिटाने के लिऐ मुझ पतित और अज्ञानी जीव को छाती से लगाया। जीवन की प्रत्येक दिशा में मुझे उत्साह, सहारा और शक्ति दी। सत्य वस्तु, सच्चाई और शान्ति का रास्ता बताया। जब में पंथ में आया था तो मैंने भी प्रण किया था कि अपना

अनुभव संसार को बता जाऊंगा और हजूर दाता दयाल जी महाराज ने फरमाया था कि चोला छोड़ने से पूर्व शिक्षा में परिवर्तन कर जाना। मुझे नहीं पता कि जो कुछ मैंने अनुभव किया वह ठीक है या ग़लत। आत्मा सत्य प्रिय है। जो कुछ मैंने गृहस्थि, शिष्य और गुरु होने की स्थिति में अनुभव किया वह मुझ को एक ऐसी अवस्था की ओर ले जा रहा है जहां न मैं, न तू, न गुरु, न चेला, न राम, न रहीम और न करीम। मगर अभी तक उस धुर धाम में मैं ठहर नहीं सकता। मालूम नहीं क्यों ? मैं यह कहने में विवश हूं कि या तो मेरे कर्म या इस संसार की रचना करने वाले की इच्छा।

मेरे इस कर्म भोग वश मैंने इन्सान बनो की आवाज़ उठाई। धर्मों और पंथों में जो रोचक और भयानक बातें धर्म और पंथ चलाने के लिए और दुनियां को पीछे लगाने के लिए कही गईं, उनको मैंने साफ कर दिया। समझ में आया की जब तक मनुष्य जीवन है वह आपस में प्रेम, सहायता और सेवा के अधीन है। अध्यात्मिक जीवन भी नाम, ध्यान प्रकाश और शब्द का अधीन है। इसलिए मैंने मन्दिर में यथा

शक्ति अनाथों, अन्धों और ग़रीब विद्यार्थियों की सहायता करने का काम किया। आर्थिक हीन लोगों के लिये होम्यौपैथिक, दांतों और आंखों का हस्पताल खोला। कई जीव भ्रम और शंका ग्रस्त होते है, उन को अपने भविष्य अथवा भाग्य की चिन्ता होती है। इनके लिये ज्योतिष का प्रबन्ध किया। जो सज्जन साधन या अभ्यास करना चाहते हैं उनके लिए भी प्रबन्ध किया। मगर जब डिप्टी सैक्रेटरी ने मन्दिर का हिसाब बताया तो ख्याल आया कि इतना व्यय करना कठिन मालूम होता है। यदि मैं परदा रखता जिस प्रकार मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होकर उनकी सहायता करता है. मरते समय ले जाता है और दवाईयें बताता है, भारत वर्ष में ही नहीं विदेशों में भी, तो जितना भी धन चाहता, मान चाहता,ले सकता था। मगर मेरी आत्मा ने नहीं माना।

मानव मन्दिर पत्रिका या अन्य किताबें जो मानवता मन्दिर में छपती हैं मैंने उन का कोई मूल्य नहीं रखा।

बिना मूल्य साहित्य बांटने का कारण मेरा ब्रह्मण के घर का जन्म है। ब्रह्मण के लिए वेद

बेचना पाप है। क्योंकि किताबों में जो कुछ लिखता हूं वह मेरा अनुभव है। इसलिए मैंने इसकी कोई कीमत नहीं रखी। रात सोचा कि माया के चक्कर में तो तू आ गया, अब बता तू क्या करेगा? मेरा निर्णय यह है।

जो सज्जन मेरे साहित्य को पढ़ते हैं यदि उन की अत्मायें इस बात को मानती हैं कि मेरे इस काम द्वारा मानव जाति का भला हो सकता है तो वह मानवता मन्दिर की सहायता करें। मन्दिर में एक पैसा की हेरा फेरी नहीं होती है। ट्रस्ट है और विधिवत हिसाब है। जब तक इस सहायता से काम चलेगा चलायूंगा। अगर न चला तो हस्पताल बन्द कर दूंगा। दाता का हुकम है कि शिक्षा बदल जाना। मानव मन्दिर जारी रहेगा। यदि किसी कारण यह भी न चल सका तो मौज मालिक। दाता दयाल के ऋण से उतीर्ण हो जाऊंगा। इसलिये जो लोग मानव मन्दिर पढ़ते हैं उनसे यह मेरी हाथ जोड़ कर प्रार्थना है कि पत्रिका का प्रकाशन बढ़ रहा है। जिन की रुची इस के पढ़ने में न हो वह न मंगवायें।

ऐ मेरी जिन्दगी के बनाने वाले ? मेरे हैपने को बनाने वाले। तेरा प्रेम था। मालूम नहीं मैंने जो कुछ किया अथवा समझा, ठीक है या ग़लत है। मैं शरणागत हूं। जिस रास्ते तेरी मौज है उसी रास्ते से मुझे ले चल। अब उस दिन की प्रतीक्षा करता हूं जब अपनी हस्ती को खोकर उसी परम तत्व में चला जाऊं।

फकीर।

फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट, होशियारपुर द्वारा बिना मूल्य बांटा जाने वाला साहित्य

1. **THE SECRET OF SECRETS**
   Written by His Holiness Pt. Faqir Chand Ji Maharaj.

2. अनुभवसार (हिन्दी) दूसरा प्रकाशन
   लेखक श्री कुबेर नाथ श्रीवास्तव, एडवोकेट, रसड़ा ।

3. मानव मन्दिर (हिन्दी)—मासिक पत्रिका ।

मिलने का पता :—

सैक्रेट्री :
मानवता मन्दिर, होशियारपुर ।

[illegible] प्रकाशित पुस्तकें,
[illegible]
[illegible] तृतीय

THE SECRET OF SECRETS

Written by His Holiness Pt. Fa[illegible]
Chand Ji Maharaj.

[illegible] (हिन्दी) [illegible]
[illegible]
[illegible]।

[illegible] (हिन्दी)—मासिक पत्रिका।

मिलने का पता :—

[illegible] :
मानवता मन्दिर, होशियारपुर।

शोक और हर्ष

मेरे सतज्ञान दाताओं में से एक महापुरुष संत गोपीलाल कृषक जी महाराज २३-११-७६ रात को इस असार संसार को छोड़ गये। मुझे दुख भी है और खुशी भी। यह सज्जन **Retd. Director of Agriculture** थे। मैंने इनकी ज़ात से बहुत कुछ हासिल किया इसलिये में उनको सतगुरु का ही रूप समझता था। सतगुरु नाम है सच्चे ज्ञान का। मैं बचपन से मालिक की तलाश के सिलसिले में एक दृष्य द्वारा दजूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज के चरण कमलों में गया था उस ज़ात पाक ने मुझे नाम दिया मगर जो सबसे असली राज़ था जो सन्तमत की कुंजी थी वो मेरी समझ में नहीं आती थी। दाता दयाल जी महाराज ने मुझे नाम दान देने और सतसंग कराने का काम दिया था और फरमाया था कि तुम को सच्चा सतगुरु आखरी मंजल तक पहुंचाने वाला सतसंगियों के रूप में मिलेगा। इस सिलसिले में श्री गोपीलाल कृषक मरहूम ने मुझ

से कुछ वर्ष हुये नाम दान के लिये मुझे चिट्ठी लिखी। मैं ने उनको जवाब दिया कि मैं किसी को नाम नहीं देता तुम जहां से मर्ज़ी हो नाम ले लो, मुझे दाता दयाल जी महाराज ने राधास्वामी नाम और गुरु स्वरुप का ध्यान बताया था। मैंने उनको लिखा था कि तुम मेरी किताबें पढ़ते रहा करो ताकि तुम भटक न जाओ। इस सज्जन ने मेरे खत को नाम दान समझा कौर राधास्वामी नाम का जाप और मेरे स्वरुप का ध्यान करना शुरु कर दिया। तीन साल के अर्सा में इसने तमाम सोपानें पार कर ली और जब इस के अन्तर बीन बजने लगी तो यह मेरे पास होशियारपुर में नौ सेव लेकर आया। उन्होंने अपनी डायरी मुझे दिखाई जिसमें हर रोज़ के इन के साधन के हालात दर्ज थे। मैंने जब डायरी पढ़ी तो मैं हैरान हो गया। डायरी में लिखा था कि मेरा रूप इसके अन्तर प्रकट होता था और इसकी सुरत को भिन २ सोपानों से गुजारता और हिदायत करता था। इससे मेरा अपना ज्ञान पक्का हो गया कि यह जितना खेल है सब इन्सानकेअपने विश्वास का है। जिस प्रकार का संसकार या ख्याल बाहर से आदमी को मिलता है वही इसके

अन्तर फुरता है । मैंने इनके अज्ञान को मिटाने के लिये इन को पांच पैसे और नारियल देकर आचार्य पदवी दे दी और कहा कि नाम दान दिया करो और सतसंग कराया करो, आखरी मंजल को तुम पहुंच जाओगे । वो आखरी मंजल बीन के सुनने और प्रकाश को देखने से आगे अलख, अगम और अनाम है । उन्होंने कम से कम पांच छः हज़ार आदमी को नाम दान दिया, संतमत लेखमाला पहला और दूसरा भाग लिखे जिसको मैंने मानव मन्दिर में छपवाया । आज इनके इस संसार से चले जाने पर सांसारिक दृष्टिकोण से अफसोस भी है और खुशी भी कि उनकी ज़ातपाक को आखरी मंजल का पता भी लग गया और उनके कारण मुझे भी संतमत के राज़ का पता लग गया । मैंने भी चले जाना है । मेरे जिम्मे दाता दयाल जी महाराज ने कर्तव्य लगाया था कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना, मैंने बदल दी । संतमत को किसी ने समझा नहीं । गुरु और चेले का एक व्यवहार है । तमाम सतसंगी इस काल और माया के चक्कर में फंसे हुए हैं । आजकल का गुरुवाद सच्चाई नहीं बनाता कि ऐ इन्सान ! तेरा मन ही गुरु है और

मन ही चेला है। सतगुरु नाम है सच्चे ज्ञान का और वो किसी रहस्य ज्ञाता संत से प्राप्त होता है। पहले ज़माने में यह राज़ जिस को मैंने खोला है, किसी खास आदमी को बताया जाता था। मैंने वो परदा उठा दिया। मैं आशा करता हूं कि जितने सज्जन श्री कृषक जी से दीक्षित हैं वो राज़ को समझें और अपने व्यवहार को सच्चाई से करते हुए अपने आप को सत, अलख और अगम में ले जाने का यत्न करें और श्री कृषक जी की तरह अपने आद घर में वासल हो जायें।

श्री कृषक जी के परिवार को कहूंगा कि उनके जीवन के अनुभवों से लाभ उठाते हुए अपने व्यवहार और परमार्थ को बनायें। यह संसार तो नाशवान है। मनुष्य शरीर दुर्लभ है। अपना जन्म बनायें।

फकीर

Regd. No. 26266/74
MANAV MANDIR

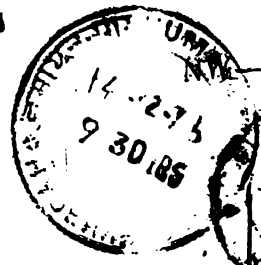

NW—HSP—7.

ADDRESS

To Sh. A. [illegible] Rao,
H. No. [illegible]-3-1418
[illegible] Nagar,
Hyderabad 28.
500028. A.P.

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.